Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MJMC
Sem-1, Paper- 101
Date- 22/04/2021

Theories of Communication

संचार के सिद्धांत

नए विचार, नए मूल्य और विभिन्न प्रकार के विचारधाराओं को सम्प्रेषित करने में जनसंचार के माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह विषय महत्वपूर्ण होने के कारण विश्व के तमाम विद्वान इस पर अध्ययन और विश्लेषण करते रहते हैं। जिससे सचांर के सिद्धांतों का जन्म होता है। संचार की प्रकिया और जो प्रारूप है उसके भीतर ही संचार के सिद्धांत समाहित है। संचार की अवधारणा पर पश्चिम के देशों ने काफी काम किया जिस पर अलग–अलग विद्धानों ने कई सिद्धांत प्रतिपादित किए। यूनानी दार्शनिक अरस्तू पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने संचार की समस्याओं पर चर्चा की और अपनी पुस्तक 'द रेथरिक' (The Rhetoric) में संचार के सिद्धांतों को प्रतिपादित करने का प्रयास किया। उन्होंने संचार पर जो प्राचीन अवधारणा दी थी उसमें वक्ता, भाषण, श्रोता, अवसर और प्रभाव को प्रमुख तत्व माना था। आधुनिक युग में संचार की अवधारणा पर आरंभिक रूप से और वैज्ञानिक आधार पर सबसे प्रमुख काम हेरॉल्ड डी. लासवेल ने किया। उन्होंने 1948 में जो मॉडल पेश किया उसके अनुसार संचार की प्रकिया में कौन क्या संदेश दे रहा है, किस माध्यम से दे रहा है और उस संदेश का असर क्या है। आधुनिक संदर्भ में विज्ञान और तकनीकी विस्तार ने संचार की प्रकिया में कई तत्वों को जोड़ दिया है।

संचार के विभिन्न पहलूओं को समझने का प्रयास करना ही संचार के सिद्धांत है।

प्रस्तुत अध्ययन में जान सकेंगे–

- संचार के सिद्धांत की व्याख्या
- परिभाषा और
- विशेषताएं।

सिद्धांत की व्याख्या

सिद्धांत शब्द अंग्रेजी के 'Theory' शब्द का हिन्दी रूपांतर है। जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'Theoria' से हुआ है। जिसका अर्थ है, किसी वस्तु अथवा तथ्य के प्रति समझने की दृष्टि से चिंतन की अवस्था में प्राप्त मानसिक दृष्टि से है जो उस वस्तु अथवा तथ्य के अस्तित्व और कारणों को प्रकट करती है। इस प्रकार सिद्धांत का सम्बंध कुछ विशिष्ट घटनाओं से नहीं बल्कि घटनाओं की सम्पूर्ण श्रेणियों से होता है।

कभी–कभी किसी तथ्य के प्रति हम अनुमान लगाते हैं जिसे हम 'प्राक्कल्पना' या Hypothesis कहते हैं। प्राक्कल्पना सिद्धांत नहीं होता क्योंकि प्राक्कल्पना विशिष्ट घटनाओं या घटनाओं से सम्बंधित ऐसा कल्पनात्मक विचार हो सकता है जिसकी सत्यता का परीक्षण करना बाकी है। अतः जब एक प्राक्कल्पना की जांच वास्तविक निरीक्षण–परीक्षण–वर्गीकरण के आधार पर करते हुए आवश्यक अवधारणाओं का निर्माण करते हैं तभी 'सिद्धांत' का प्रतिपादन होता है।

परिभाषा

रॉबर्ट के मर्टन Robert K. Merter ने अपनी पुस्तक 'Sociology of Today' में सिद्धांत की परिभाषा देते हुए लिखा कि– 'केवल उसी अवस्था में जबकि अवधारणाएं एक योजना के रूप में अंतःसम्बंधित हो जाते हैं तभी एक सिद्धांत पनपना प्रारंभ हो जाता है। (It is only when concepts are interrelated in the eforms of a scheme that is theory begins to emerge.')

Talcott Parsons ने सिद्धांत को परिभाषित करते हुए कहा कि–''सिद्धांत कुछ ज्ञात तथ्यों से निकाले गए सामान्यीकरण से बनता है और वह इस अर्थ में कि ज्ञात तथ्य समूह का औचित्य कौन से सामान्य कथन करेंगे।'' ("Theory would consists only a generalization from known facts in the sense of what general statements the known body of fact would justify.')

विशेषताएं

प्रो. पी. लूमिस ने अपनी पुस्तक 'Modern Sociological Theory' में सिद्धांत की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है जो कि इस प्रकार है–

1. सिद्धांत अवधारणाओं का एक संयुक्तीकरण है।

2. एक से अधिक अवधारणाओं को एक साथ जोड़ देने से ही सिद्धांत का निर्माण नहीं हो जाता बल्कि सिद्धांत निर्माण के लिए आवश्यक है कि जुड़ने वाली अवधारणाएं आपस में तर्कसंगत हो।

3. अवधारणाओं का विकास वैज्ञानिक मनमाने ढंग से नहीं करता बल्कि वास्तविक निरीक्षण, परीक्षण और सामान्यीकरण के आधार पर कुछ तर्क वाक्यों की सहायता से करता है।

इस प्रकार सिद्धांत किसी समस्या का निदान एवं सरलीकरण से होता है।

******